आमतौर पर किसी दूसरे की सहायता करना खुद की समस्याएं सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका होता है। - **माइकल डिमार्टिनो,** अमेरिकी एनिमेटर

अच्छी सोच

रंगों में होते हैं प्रेम व दिव्यता जैसे गुण

मानव का शरीर भी एक रचना है। यह रचना तभी है, जब संतुलन बना हुआ है। मानव तभी सेहतमंद और खुश रहता है, जब उसके समस्त बल और उसके शरीर की रचना भीतर से संतुलित रहती है। रोगी शरीर और कुछ नहीं बस असंतुलन ही है। यदि मन और काया के स्तर पर शुद्धि है तो कोई परेशानी नहीं होती।

इस तरह के असंतुलन को अध्यात्म से ठीक किया जा सकता है।

योगी अश्विनी
ध्यान फाउंडेशन, नई दिल्ली

जरूरी है बीमारी की जड़ तक पहुचना। आध्यात्मिक प्रक्रिया से शरीर से वह रोग पूरी तरह से खत्म किया जा सकता है, जबकि आधुनिक चिकित्सा से किए जाने वाले उपचार या तो रोग को दबाते हैं या फिर रोग के किटाणुओं को मार देते हैं। आध्यात्मिक रूप से जो उपचार होता है, वह शरीर को हुई बीमारी की जड़ पर प्रहार करता है। आध्यात्मिक उपचार का जिक्र अथर्व वेद में किया गया है। ऋषि अंगीरस ने यतु विद्या अध्याय में इसका उल्लेख किया है। यतु का अर्थ है अभी। आध्यात्मिक उपचार भी बहुत कम समय में असर दिखाता है। इसमें रंगों से इलाज किया जाता है। लाखों छटाओं को मिलाकर बने रंगों से ध्यान आश्रम में उपचार किया जाता है। हर रंग की अपनी विशेषता है। कुछ मन को सुकून देते हैं, कुछ प्रेम प्रदर्शित करते हैं, कुछ दिव्यता के लिए होते हैं, कुछ में शक्ति होती है, कुछ में क्रोध तथा कुछ मंदता और अवसाद लाते हैं। इन सभी का शरीर पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। ध्यान के अभ्यास में इन्हीं रंगों को लेकर शरीर की एक-एक कोशिका पर या विभिन्न कोष तक जाते हैं। इस विज्ञान में कोई अस्पष्टता या संदेह नहीं रहता है। इसका असर भी तत्काल और स्थायी होता है। हजारों सालों से यह प्रयोग लोगों पर किया जा रहा है और सफल भी रहा है।

बस ध्यान इस बात का रखना होता है कि उपचारकर्ता को पूरी सजगता रखनी होती है। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह भीतर से कितना शुद्ध है और उसने खुद को कितना अनुशासित कर रखा है। आध्यात्मिक चिकित्सा का लाभ उठाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उपचारकर्ता का रोगी के साथ किसी प्रकार का भौतिक आदान-प्रदान न हो, अर्थात इस विद्या का व्यापारीकरण न किया जाए।

प्रेरणा • पानी और ऑक्सीजन के बार-बार उपयोग की असाधारण तकनीक भविष्य में हमारे लिए बहुत उपयोगी होगी

मंगल पर पानी, टेक्नोलॉजी में छलांग

दिनेश सी शर्मा
विज्ञान संबंधी विषयों के लेखक और सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज, दिल्ली के फेलो

जब मंगल पर गर्मी होती है तो पहाड़ियों के उतार गहरे रंग के हो जाते हैं और ठंडे वातावरण में इनका रंग हल्का पड़ जाता। रंग हायड्रेटेड सॉल्ट (जलयुक्त लवण) की मौजूदगी के कारण बदलता है।

जब वैज्ञानिक किसी ग्रह पर जीवन की बात करते हैं तो वे वहां विज्ञान कथाओं में वर्णित परग्रहियों की नहीं, सूक्ष्मजीवी (माइक्रोब) होने की बात करते हैं।

साठ साल पहले अंतरिक्ष में शोध शुरू होने के साथ ही मंगल ग्रह में मानव की रुचि जाग गई थी। अंतरिक्ष विज्ञान के उस शैशव काल में ही अमेरिका और तत्कालीन सोवियत संघ के वैज्ञानिकों ने लाल ग्रह पर यान भेजने के प्रयास किए थे। इन यानों द्वारा लिए गए शुरुआती चित्रों में मंगल ग्रह धुंधली-सी लाल गेंद जैसा नजर आ रहा था। वहां से शुरुआत करके अब हम इस ग्रह के बारे में इतना जानते हैं कि वहां मानव भेजने के बारे में सोचने लगे हैं। मंगल ग्रह के बारे में जाने की इस अद्भुत यात्रा में वहां पानी होने की संभावना की खोज महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

पिछले दो दशकों में भेजे कई अभियानों से यह तो स्पष्ट था कि मंगल ग्रह पर किसी वक्त पानी तो था। वहां मौजूद घाटियों, चैनलों और नहरों के उपग्रह से लिए कई चित्र हमने देखे हैं। यह लाखों वर्ष पहले वहां पानी होने के कारण ही बने होंगे। हमारे मंगल अभियान और अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा की नवीनतम खोज तो अब भी मंगल ग्रह पर पानी होने की संभावना बताती है। यह जानना रोचक है कि यह खोज हुई कैसे। उपग्रहों ने कुछ पहाड़ियों के उतार के बार-बार चित्र लिए थे। इन्हें देखने पर पता चला कि पहाड़ियों के ये उतार अलग-अलग मौसम में रंग बदलते हैं। जब गर्मी का मौसम होता है तो ये उतार गहरे रंग के हो जाते हैं और थोड़े ठंडे वातावरण में इनका रंग हल्का पड़ जाता है। एरिजोना यूनिवर्सिटी के बीएससी के एक छात्र ने सबसे पहले यह फर्क पकड़ा था। वह नासा के उपग्रह मार्स रिकॉनिसन्स ऑर्बिटर (एनआरओ) से 2010 में मिले डेटा का अध्ययन कर रहा था।

लुजेंद्र ओझा नेपाली मूल का छात्र है, जो 2005 में अमेरिका आ गया था। तब से लेकर लुजेंद्र ने मंगल ग्रह से संबंधित कई शोध-पत्र प्रकाशित किए हैं। वर्तमान में वह जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से पीएचडी कर रहा है। 2010 से 2015 के बीच लुजेंद्र ने नासा से मिले चित्रों का अध्ययन किया। उसने निष्कर्ष निकाला कि पहाड़ियों के उतारों का रंग हायड्रेटेड साल्ट (जलयुक्त लवण) की मौजूदगी के कारण बदलता है। किसी दीपक की बाती की तरह ये लवण नीचे से नमी प्राप्त कर रहे हैं। लुजेंद्र का कहना है कि अब तक लोग जमे हुए पानी यानी बर्फ होने की बात कर रहे थे, लेकिन उसकी स्टडी ने बहते पानी के सबूत दिए हैं। हालांकि, वैज्ञानिकों को अब तक यह नहीं पता है कि सतह के नीचे मौजूद पानी का स्रोत क्या है। क्या यह धरती पर पाए जाने वाले भूमिगत जल के स्रोत एक्वीफर

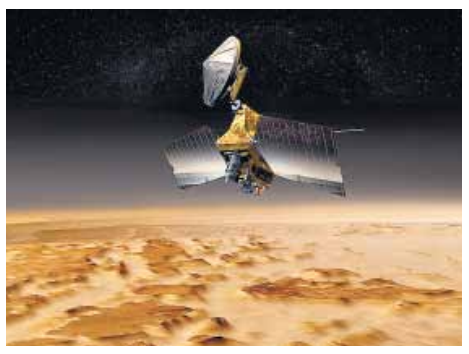

(जलयुक्त चट्टानें) हैं? क्या यह ध्रुवीय बर्फ के पिघलने का परिणाम है? या वहां कोई अन्य स्रोत है। अभी हमें पक्का कुछ भी पता नहीं है।

जो भी हो, लेकिन इस खोज ने वैज्ञानिक समुदाय और पूरी मानवता के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। एक तो यही कि यदि वहां पानी है तो क्या जीवन भी किसी स्वरूप में मौजूद है? दूसरा संभावनायुक्त सवाल यह है कि यदि वहां पानी है तो क्या वह मंगल पर मानव जीवन संभव बना सकता है? इन प्रश्नों पर उम्मीद की पूरी गुंजाइश है। गौरतलब है कि जब वैज्ञानिक किसी ग्रह पर जीवन होने की बात करते हैं तो वे वहां विज्ञान कथाओं में वर्णित परग्रहियों की नहीं, सूक्ष्मजीवी (माइक्रोब) होने की बात करते हैं। किंतु मंगल पर सूक्ष्मजीवियों को खोज निकालना पेचीदा मामला है। वैज्ञानिकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि मंगल पर उतरने के लिए भेजे जाने वाले यान मंगल की सतह को प्रदूषित न करे। अन्यथा होगा यह कि इन यानों के जरिये हम धरती के सूक्ष्मजीवी वहां ले जाएं और फिर उन्हें वहां जीवन की मौजूदगी के सबूत के रूप में खोज निकालें। मान लें कि किसी दिन कोई मानव किसी दिन मंगल की सतह पर उतरता है और तो अंतरिक्ष यात्री अपने साथ लाखों-लाख सूक्ष्मजीवी धरती से मंगल तक ले जाएंगे। यही वजह है कि इस मामले में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरे सवाल का संबंध पानी होने की स्थिति में मानव के वहां बसने की क्षमता से संबंधित है। कहीं भी रहने के लिए हमें जीवन के तीन आधारभूत तत्वों की जरूरत होती है- पानी, भोजन और आवास (या वायुमंडल)। मानव को यदि मंगल पर जाकर बसना है, तो इन तीनों की जरूरत होगी। यदि वहां मानव बस्ती आकार लेती है तो उसमें स्थानीय स्तर पर खाद्य सामग्री उगाने और जीवित रहने लायक आवास या आश्रय निर्मित करने की क्षमता होनी चाहिए। इन सारे प्रश्नों पर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बरसों से विचार कर रहे हैं। 1998 में प्रक्षेपित अंतरराष्ट्री अंतरिक्ष केंद्र, अंतरिक्ष की प्रयोगशाला के रूप में काम कर रहा है। यह धरती से 400 किलोमीटर ऊपर अंतरिक्ष में चक्कर लगा रहा है। अंतरिक्ष यात्रियों को वहां लंबे समय तक रहने के लिए भेजा जाता है ताकि इतनी लंबी अवधि में अंतरिक्ष के मानव शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। आईएसएस में किसी अंतरितक्ष यात्री के रहने की सबसे बड़ी अवधि एक वर्ष है। मंगल जैसे दूर के ग्रहों की यात्रा के लिए इस तरह का अनुभव होना आवश्यक है। आईएसएस में कृत्रिम प्रकाश और उर्वरकों का प्रयोग कर सफलतापूर्वक लेट्यूस उगाया जा चुका है। इससे स्पेस फार्मिंग की संभावना खुली है। आईएसएस में पसीना, आंसू व यूरीन तक पानी की हर बूंद का रिसाइकल किया जाता है यानी बार-बार इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि वहां ताजे पानी का कोई स्रोत तो नहीं है।

यह करने के लिए भी रिसाइकलिंग की अत्यंत उन्नत टेक्नोलॉजी विकसित की गई। इसी तरह यान के वातावरण से ही ऑक्सीजन का दोहन कर अंतरिक्ष यात्रियों को श्वसन के लिए उपलब्ध कराई गई। इस तरह ऑक्सीजन के हर अणु का उपयोग किया जाता है। यह सारा अनुभव व टेक्नोलॉजी का तब इस्तेमाल होगा, जिस दिन आखिरकार मानव के कदम मंगल ग्रह पर पड़ेंगे। हॉलीवुड की हाल में जारी की गई 'द मार्शियन' में इनमें से कई टेक्नोलॉजी दिखाई गई है। नासा ने कहा है कि ये असली टेक्नोलॉजी है, जिस पर वह काम कर रही है। सच तो यह है कि इस स्पेस एजेंसी ने 'द मार्शियन' को बनाने में टेक्नीकल मदद दी है। कुछ लोग दलील देते हैं कि हमें मंगल ग्रह पर अभियान भेजने पर पैसा बर्बाद क्यों करना चाहिए। ऐसा सोचना गलत है कि ये सारी गतिविधियां बर्बादी है। हमें यह याद रखना होगा कि अंतरिक्ष विकास की कई टेक्नोलॉजी मानव के लिए धरती पर उपयोगी सिद्ध हुई है। मसलन, डिजीटल कैमरा ही लें तो इसे मूलतः अंतरिक्ष अभियान के लिए विकसित किया गया था। अंतरिक्ष में पानी के फिर उपयोग और वहां सलाद उगाने की टेक्नोलॉजी जल्दी ही धरती पर भी किसी रूप में उपयोग होने लगेगी। इस तरह अंतरिक्ष अभियानों से हम सब को फायदा है। नई चुनौतियां लेकर नए-नए क्षेत्र में शोध मानव का स्वभाव है।

खुशी के रंग

बच्चों में कब किसका मूड बदल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। अमेरिका में इन बच्चियों के साथ यही हुआ। वे व्हाइट हाउस के साउथ लॉन में राष्ट्रपति बराक ओबामा को हैलो करने आई थीं, लेकिन उन्होंने मरीन वन हेलिकॉप्टर में उड़ान भर ली। इससे वे मायूस हो गईं। लेकिन जब हेलिकॉप्टर से हवा का तेज झोंका आया, तो खुश हो गईं और उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया कुछ इस तरह दी। फोटोग्राफर जैकलीन मार्टिन ने बच्चियों के इस दृश्य को फोटो बना दिया।

तो ये करें...

जब दुख आपको भीतर से कमजोर करने लगे

जीवन में प्रिय व्यक्ति को खोना बहुत दुखदायक होता है। यह दुख व्यक्ति को भीतर से तोड़ देता है। लगता है कि इस दुख से उबरना नामुमकिन है। स्वास्थ्य, नौकरी, निजी रिश्ता और पालतू पशु-पक्षी खोने से भी व्यक्ति इसी प्रकार के दुख में डूब सकता है।

कला के माध्यम से याददाश्त बदलें

1. न्यूरो साइंस में अब तक की गई खोजों से पता चला है कि चित्रकला जैसी ललित कलाओं से दिमाग में दुख से जुड़ी पांचों इंद्रियों की स्मृतियों को सुखद स्मृति में बदला जा सकता है। रचनात्कता हमें नएपन की अनुभूति कराती है।

2. सोशल मीडिया पर ऐसे पेज हैं, जिनमें मेमोरियल मैसेज आदि के जरिये बड़े समुदाय से जुड़कर दुख कम किया जा सकता है।
3. गहरी सांस लें और छोड़ें। शांत महसूस करने पर कल्पना करें कि सिर से रोशनी का बीम शरीर में नीचे उतर रहा है और नकारात्मकता को नीचे धकेल रहा है, जो पैरों के तलवों से काले धुएं के रूप में बाहर निकल रहे हैं।

विटामिन सी लेकर शरीर में ऊर्जा का स्तर बढ़ाएं

1. किसी क्रिया को पूरी जागरूकता से करें। जैसे भोजन ग्रहण करना। थाली से व्यंजन उठाना, उसकी सुगंध महसूस करना, स्वाद को गहराई से जानना और फिर भोजन को पेट में उतरते महसूस करना। इससे आप वर्तमान में जीना सीखते हैं।

2. दुख यदि बहुत गहरा है तो ऊर्जाहीनता महसूस होती है। फलों के जरिये और जरूरत महसूस हो तो विटामिन 'सी' की गोलियां लेकर ऊर्जा का स्तर बढ़ाएं।
3. दुख यदि अवसाद में बदल चुका है, तो चिकित्सक के मार्गदर्शन में एंटीडिप्रेसंट, एंटी एंग्जाइटी और गहरी नींद लाने वाली दवाओं से भी मदद मिलती है।

समस्याएं सुलझाने वाली तकनीक का सहारा लें

1. समस्या सुलझाने की तकनीक अपनाएं। दुख को परिभाषित करें यानी समझे कि इसका स्वरूप क्या है। क्या, कहां, कैसे, कब, क्यों जैसे प्रश्नों का जवाब खोजकर विश्लेषण करें। क्या होना चाहिए यह सोचें। तीन-चार समाधान ढूंढें। फिर एक समाधान चुनें। ऐसे तार्किक चिंतन से भावनात्मक उफान से उबरा जा सकता है।

2. बौद्ध धर्म में बताया गया टॉन्लेन ध्यान करें। कल्पना करें कि श्वास लेने के साथ दुसरों के दुख आप ग्रहण कर रहे हैं और सांस छोड़ने के साथ उन्हें प्रसन्नता व सफलता दे रहे हैं। टॉन्लेन यानी लेना-देना। इससे भीतर गहरी शांति उतरती है और दुख से मुक्त होने में मदद मिलती है।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

तेल के अकूत भंडार से घबराने लगे हैं अमेरिकी

अमेरिका के पास कच्चे तेल का कितना भंडार है, किसी को पता नहीं है। समझा जाता है कि दुनिया में सभी देशों के पास तेल खत्म हो जाएगा, तब भी अमेरिका कई साल तक कच्चे तेल का उपयोग कर सकेगा। अब ऐसा नहीं है, वहां वर्ष 2008 के बाद कच्चे तेल का इतना ज्यादा उत्पादन होने लगा कि भंडारण की समस्या खड़ी हो गई। इस काम में लगे उद्यमी संसद से निर्यात पर लगा वह प्रतिबंध हटाने की गुजारिश कर रहे हैं, जो 40 साल पहले लगाया गया था। ये उद्यमी संसद को राजी करने के लिए 1551 करोड़ रुपए सालाना खर्च करते हैं।

• **एरिक लिप्टन एवं क्लिफोर्ड क्रॉउस**

अमेरिकी संसद तेल के निर्यात पर लगा प्रतिबंध हटाने की मंजूरी दे देती है, तो न केवल हजारों नए रोजगार पैदा होंगे, बल्कि आम नागरिकों के लिए गैसोलीन की कीमतें भी कम हो जाएंगी।

अमेरिका में कच्चे तेल का उत्पादन करने वाली कंपनियों ने पिछले 40 सालों में सीधे तौर पर किसी देश को तेल निर्यात नहीं किया। वहां तेल उत्पादन करने वाली दिग्गज कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों का समूह हाल ही में वॉशिंगटन पहुंचा। उनका उद्देश्य संसद तक अपनी बात पहुंचाना है कि उन्हें भी तेल निर्यात करने की छूट दे दी जाए।

सीधा मतलब यह है कि इन कंपनियों के पास तेल का इतना ज्यादा भंडार हो गया है कि उसे रिफाइनरी में संभालना महंगा पड़ रहा है। इस कार्य में अरबों डॉलर खर्च हो रहे हैं। सरकार के निर्देश पर तेल बेचने एवं घरेलू उद्योगों को बेचने में उनका मुनाफा घटने लगा है। संभावना है कि आने वाले सप्ताहों में संसद इस विषय पर कोई फैसला दे। अमेरिका और ओपेक की प्रतिस्पर्धा के कारण तेल की कीमतें गिरने से इन कंपनियों को मुनाफा निकलना महंगा पड़ रहा है। एक्सन मोबिल के वाइस प्रेसीडेंट कहते हैं, हमें भरोसा है कि अच्छा फैसला जल्द होगा। शीर्ष कारोबारियों का यह भी मानना है कि अगर निर्यात से प्रतिबंध हटता है, तो हजारों नए रोजगार पैदा होंगे। उत्पादन बढ़ेगा, जिससे गैसोलीन की कीमतें घटेंगी, उसका लाभ आम लोगों को मिलेगा।

तेल निर्यातक कंपनियां अपने संबंधों का हवाला देकर अन्य देशों के साथ लगातार संपर्क में हैं। वे 'डिप्लोमैटिक चैनल' के माध्यम से समर्थन चाहती हैं। अमेरिकन पेट्रोलियम इंस्टीट्यूट में कारोबारियों का पक्ष रखने वाले शीर्ष अधिकरी लुई ए. फिनकेल कहते हैं, हमने इस प्रतिबंध को बड़े अभियान के रूप में लिया है। इस कार्य के लिए इंस्टीट्यूट का सालाना बजट 1551 करोड़ रुपए है। उसमें से 462 करोड़ रुपए टीवी विज्ञापनों, सोशल मीडिया और प्रचार के अन्य माध्यमों पर खर्च किए जाते हैं। उद्देश्य एक ही है, संसद को इस बात के लिए राजी करना कि वह तेल निर्यात से प्रतिबंध हटा दे। ऐसे प्रचार के कारण ही आज अमेरिका को 'एनर्जी नेशन' व 'एनर्जी सिटीजन' कहा जाने लगा है।

प्रतिबंध का फैसला : 1975 में कांग्रेस (संसद के निचले सदन) ने राष्ट्रपति जेराल्ड आर. फोर्ड को निर्देश दिया था कि वे कंपनियों द्वारा सीधे तौर पर तेल निर्यात पर प्रतिबंध लगाएं। इसमें राष्ट्रहित का हवाला दिया गया था। कनाडा को उसमें छूट दी गई थी।

अब में हालात बदल गए हैं। वर्ष 2008 के बाद से अमेरिका का घरेलू तेल उत्पादन दुगुना हो गया है। इससे अमेरिका की ओपेक पर निर्भरता खत्म हो गई। पिछले साल अमेरिका ने टेक्सास के गेलवेस्टन रिफाइनरी से 4 लाख बैरल कच्चा तेल दक्षिण कोरिया भेजा था। उसे सिंगापुर के ध्वज वाले समुद्री टैंकर पर अपलोड किया गया था। उत्तर अमेरिका से बाहर चार दशक बाद अमेरिका का तेल किसी को गया था। वर्तमान में कच्चे तेल की कीमतें लंबे समय से 50 डॉलर प्रति बैरल से नीचे है। इसके दो कारण हैं। पहला, अमेरिका की ओपेक के साथ प्रतिस्पर्धा। दूसरा, अमेरिका में तेजी बढ़ता तेल उत्पादन। इसके परिणामस्वरूप अमेरिकी तेल कंपनियों के मुनाफे में काफी गिरावट आ गई है।

गेलवेस्टन रिफाइनरी में 2500 कर्मचारी हैं और प्रतिदिन वहां 4 लाख 51 हजार बैरल से अधिक तेल रिफाइन होता है।

ओपेक से आगे अमेरिका

* ओपेक पेट्रोलियम निर्यात करने वाला 13 देशों का संगठन है। माल रोककर कीमतें बढ़ाने और एकदम से निर्यात तेज कर कीमतें घटाने में उसकी भूमिका होती थी। अमेरिका में तेल उत्पादन बढ़ने से विश्व में वह बड़ा तेल निर्यातक बनकर उभरा। इस तरह ओपेक पर कई देशों की निर्भरता घट गई।

* वर्ष 1996 के बाद दुनियाभर में तेल के उत्पादन में वृद्धि हुई है। पहले यह 63 लाख बैरल प्रतिदिन था, जो अब 80 लाख बैरल से अधिक है। जब मांग नहीं बढ़ती है, तो कीमतें प्रभावित होती हैं। वर्ष 2011 में प्रति बैरल कीमत बढ़ने और हाल के वर्षों में इसके कम होने के यही कारण हैं।

© The New York Times

अब सेन फ्रांसिस्को जैसा नहीं बनना चाहता सिएटल

• **निक विंगफील्ड,** आईटी क्षेत्र के विशेषज्ञ

सेन फ्रांसिस्को की कंपनियों में शीर्ष अधिकारी एवं शेष कर्मचारियों का वेतन दूसरे शहरों के मुकाबले कहीं अधिक है। संभवतः इसीलिए सिएटल के उद्यमी वहां के कारोबारी वातावरण पर अध्ययन कर रहे हैं। उनका मानना है, जरूर ऐसा कोई मॉडल है, जिससे वह पूरा क्षेत्र फल-फूल रहा है। इसका एक प्रमुख कारण रियल एस्टेट की बढ़ती कीमतें भी हैं। महंगाई इतनी है कि स्थानीय लोग दूसरे शहर जाने लगे हैं। ये उन दो शहरों की हकीकत है, जो दुनिया के बड़े आईटी हब हैं। एक शहर में कारोबारी वातावरण ज्यादा है, तो दूसरे में इसके साथ जीवन के मूल्य भी हैं। हाल के वर्षों में सेन फ्रांसिस्को में समृद्धि तेजी से बढ़ी है। करीब 20 नए अरबपति और छह अंकों में वेतन पाने वालों की संख्या बढ़ी है। इससे दोनों शहरों की अर्थव्यवस्था में ईर्ष्या का वातावरण है।

सिएटल में घरों की कीमतें सामान्य हैं, जबकि सेन फ्रांसिस्को में कीमतें रॉकेट की तेजी जैसी बढ़ रही हैं। वहां एक बेडरूम वाले फ्लैट का मासिक किराया करीब 2 लाख 30 हजार रुपए है, जो अमेरिका में सर्वाधिक है। जबकि सिएटल में ज्यादातर लोगों का विचार है कि इस शहर का सामान्य वातावरण बरकरार रखा जाए। ऐसा इसलिए क्योंकि जिन शहरों में बड़ी कंपनियों के कार्यालय खुल जाते हैं, वहां घरों की कीमतों के साथ महंगाई भी बढ़ जाती है। गत वर्ष गूगल ने घोषणा की थी कोलेराडो के बोल्डर शहर स्थित उसके परिसर का विस्तार किया जाएगा। उसके बाद वहां घरों की कीमतों पर बहस शुरू हो गई।

सिएटल ही वह शहर है, जहां गत वर्ष 15 डॉलर (करीब 990 रुपए) प्रतिघंटे न्यूनतम वेतन का प्रस्ताव पारित किया गया था। साथ ही वहां के महापौर एड मुरे ने महत्वाकांक्षी किफायती आवास योजना को हरी झंडी दी और शहरवासियों से वादा किया कि वे मैन्युफैक्चरिंग एवं समुद्री उद्योग का विस्तार करेंगे। सिएटल में लोगों को करीब से जानने वाले इतिहासकार केनट बर्गर कहते हैं- यह शहर लंबे समय से सेन फ्रांसिस्को बनना चाहता था, लेकिन अब दिख रहा है कि हम वैसे नहीं होना चाहते। यहां लोग एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं, उद्यानों में मिलते हैं। यही सिएटल की संस्कृति है।

ऑस्टिन शहर के मैट ओट एक स्टार्टअप में मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव हैं। उन्होंने एक दशक पहले महंगाई के कारण सेन फ्रांसिस्को छोड़ा था। वे कहते हैं, तुलनात्मक रूप से अमेरिका में सिएटल आईटी का दूसरा बड़ा हब है। अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट के अलावा 10 साल में यह शहर सैकड़ों छोटी कंपनियों की पसंद बना है। वॉशिंगटन टेक्नोलॉजी इंडस्ट्री एसोसिएशन की रिसर्च फर्म कम्युनिटी एट्रिब्यूट्स के अनुसार सिएटल और आसपास के क्षेत्रों में आईटी नौकरियों की संख्या बढ़ी है। ऐसी कई बातें हैं, जो आम लोगों एवं आईटी से जुड़े पेशेवरों को यहां रहने के लिए आकर्षित करती हैं।

© The New York Times